Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 3, July-September, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जीवन आ रचनात्मक यात्रा

डॉ. राम नरेश राय
सहायक प्राध्यापक
ललित नारायण मिश्र स्मारक महाविद्यालय, बीरपुर (सुपौल)

मैथिली साहित्यक आधुनिक गद्य-परंपराक एक प्रमुख स्तंभ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी छथि। हुनक लेखनी सौंदर्य-रचनासँ आगाँ बढ़ि, ग्रामीण जीवनक कठोर यथार्थकेँ उजागर करैत अछि। समाजक संघर्ष, संस्कृति आ संवेदनाकेँ पकड़ि ओ अपने रचनाकेँ एक जीवित दस्तावेज़ बना देलनि। जीवन अनुभव, खेतीक श्रम, पारिवारिक जिम्मेदारी आ सामाजिक चेतनाक अद्भुत संतुलन हुनक सम्पूर्ण रचनात्मक साधनामे निरंतर झलकि रहल अछि।

मैथिली साहित्यक नव यथार्थवादी परंपराक विशिष्ट हस्ताक्षर मण्डलजीक जन्म 5 जुलाइ 1947 इस्वीमे बिहारक मधुबनी जिलाक झंझारपुर अनुमंडल अंतर्गत लखनौर प्रखंडक 'बेरमा' गाममे भेल। मण्डलजीक शब्दमे- "दिनांक 5-7-1947 इस्वीमे जन्म भेल। भरल-पुरल परिवार। तीन पीढ़ीसँ एकपुरुखियाह परिवार चलि अबै छल। जहिना बाबा तहिना पिता छला। घर लग पोखैर-इनार रहने पानिक सुविधा रहल।"[i] ई गाम सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक विविधता आ शैक्षिक परंपरासँ समृद्ध पंचायत सेहो थिक, जतए जातीय भिन्नता आ धार्मिक बहुलता संगे-संग मैत्रीभावक वातावरण विकसित रहल। एहि ग्रामीण परिवेशमे मण्डलजीक जन्म स्वतंत्र भारतक आरम्भिक सामाजिक पुनर्रचनाक कालमे भेलनि, जे हुनक जीवन-दृष्टिकोणक आधारभूमि बनल।

बाल्यावस्थामे मण्डलजी पिता श्री दल्लू मण्डलजीक छत्रछायासँ वंचित भऽ गेलाह। दल्लू मण्डलजी एक सजग कृषक, कबीरपंथी विचारधारासँ प्रभावित आ सामाजिक समरसताक प्रबल समर्थक व्यक्ति छलाह। हुनकर निधन 1950 ई.मे भऽ गेलनि, ताहि समय पुत्र जगदीश प्रसाद मण्डलजी मात्र तीन वर्षक छलाह। एहि वियोगपूर्ण अवस्था हुनका भीतर सूक्ष्म मानवीय संवेदना, आत्मावलोकन आ आत्मनिर्भरता विकसित कएलक। मातृशक्ति श्रीमती मकोवती देवीक त्याग आ दृढ़ता, ओहि अनुपस्थितिकेँ सम्बलसँ भरैत, पुत्रक पालन-पोषण करैत हुनका भीतर संघर्षशील चेतना, नैतिक दृढ़ता आ शिक्षा-पिपासाक बीज रोपलक। स्वतन्त्रता-कालीन तेजस्विनी स्त्रीक रूपमे मण्डलजीक माता पारिवारिक, सामाजिक आ राजनीतिक दायित्वक सतत निर्वाह करैत अनुकरणीय उदाहरण बनलीह।

शैक्षणिक दृष्टिसँ मण्डलजीक यात्रा अनुशासित आ आत्मबलसँ संपोषित रहल। आरम्भिक शिक्षा गामक प्राथमिक विद्यालयसँ शुरू भऽ झंझारपुरक केजरीवाल विद्यालयमे माध्यमिक शिक्षा पूर्ण भेल। "अन्ततः सी.एम. कालेजहिसँ ई 1969-71 सत्रमे एम.ए. (हिन्दी) मे अपन नामांकन करौलनि आ स्नातकोत्तर स्तरक शिक्षा प्राप्त करबामे सफल भेलाह।"[ii] विशेष बात ई जे उच्च शिक्षा प्राप्त करैत काल ओ गाममे रहिकऽ कृषि कार्य आ पारिवारिक दायित्वक समान्तर निर्वाह करैत रहलाह–जे स्वयंमे ग्रामीण चेतना आ कर्मशील जीवनशैलीक परिचायक अछि।

विवाहक सन्दर्भमे मण्डलजीक जीवन सामाजिक संरचना आ पारिवारिक नीतिसँ गहींर रूपेँ जुड़ल रहल। हुनक विवाह श्रीमती रामसखी देवीसँ भेलनि, जे मछधी गामक रहनिहारि छलीह–सरल स्वभाव आ पारंपरिक ग्रामीण परिवेशक अंग। एहि विवाहमे पारिवारिक कुल-मूलक सामंजस्य आ सामाजिक समरसता दुनू प्रतिबिम्बित होइत छल। विवाहक बुनावटमे सांस्कृतिक संवादक संग ग्रामीण जीवनक उदार मूल्य सेहो समाहित छल, जे मण्डलजीक साहित्यिक दृष्टिमे लोकजीवनक नव अनुभवक रूपमे अंकित भेल।

श्री मण्डलजीक व्यक्तित्वक विशेषता हुनक जीवन-संघर्षक विविध आयाममे प्रकट होइत अछि। आर्थिक अभाव, सामाजिक दबाव, जातीय संरचनासँ टकराव आ राजनीतिक प्रतिरोधक बीच ओ जे धैर्य, दृष्टि आ वैचारिक दृढ़तासँ आगाँ बढ़लाह, से हिनका सिद्धान्तनिष्ठ, समाजनिष्ठ आ साहित्यनिष्ठ व्यक्तित्वक रूपमे प्रतिष्ठित कएलक। लेखकक जीवन केवल शब्दक खेल नहि रहल। ओ अपन कर्मसँ सामाजिक परिवर्तनक वाहक बनलाह। जीवनक यथार्थकेँ जीबैत ओ लेखनीक माध्यमसँ समाजक चेतनाक निरंतर पुनर्संरचना करैत रहलाह।

संक्षेपमे, श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जीवनक आरम्भिक सोपान–जन्म, बाल्यकाल, शिक्षा आ विवाह–केवल

व्यक्तिगत इतिहास नहि, ई व्यापक सामाजिक अनुभवक परिचायक सेहो बनल। हुनक जीवन आ साहित्य एक-दोसराकेँ पूरक अछि। एहेन कारणसँ समाजक प्रत्येक स्तरक पाठक हुनका मात्र लेखक नहि, बल्कि आत्मीय संवादकर्ताक रूपमे स्वीकार करैत अछि।

आजीविका आ आत्मनिर्भरता: जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आजीविका मुख्य रूपसँ खेती-बारी रहल। मुदा ओ खेतीकेँ मात्र अन्न उपार्जनक साधन नहि मानि सामाजिक स्वाभिमान आ आत्मनिर्भर जीवनक आधार सेहो मानलनि। पिताक निधनक बाद पारिवारिक भार मायक संग पिसियौत भाइक सहयोगपर चलैत रहल, मुदा 1960 ई.मे जखन पिसियौतक परिवार गाम छोड़िकए गेल, तखन सम्पूर्ण खेती-बारीक दायित्व हिनकहि कान्हपर आबि पड़ल।

जगदीश प्रसाद मण्डलजी खेतीसँ जीवनयापन करैत पारंपरिक पद्धतिपर निर्भर नहि रहलाह। धान, गहुम, मड़ुआ, रबी-राइ सदृश परंपरागत उत्पादनक संगहि तरकारी- मिर्चाय, अल्लू, कोबी, भाटा, सीम इत्यादिक खेतीक प्रयोग करैत रहलाह। पूसा मेला, किसान प्रशिक्षण शिविर आ कृषि पुस्तकसभक अध्ययन हुनकर नियमित अभ्यास रहल। एहिसँ साफ बूझि पड़ैत अछि जे मण्डलजी केवल किसान नहि, बल्कि प्रयोगशील आ विचारशील किसान रहलाह अछि। "कृषक जीवनमे हिनक प्रवेश 1960 इस्वीसँ आरम्भ भेल आ तहियासँ अद्यपर्यन्त ई अपन आजीविकाक एहि साधनक प्रति पूर्ण मनोयोग दैत आबि रहल छथि।"[iii]

ओही कृषक जीवनक अनुभव हुनकर लेखनमे प्रत्यक्ष देखाइत अछि। माटिक गंध, धानक कटाइ, मड़ुआक बोआइ, गोबरक खाद, बाढ़ि आ ऋतुचक्रक चित्रण मात्र दृश्य वर्णन नहि, ई सभ जीवनक गहींर अनुभव आ संवेदनाक अभिव्यक्ति अछि। हुनक मान्यता रहल छनि जे दस कट्ठा उपजाऊ खेत एक पाँच सदस्यीय परिवारक लेल पर्याप्त अछि। ई कथन सिरिफ व्यवहारिक सलाह नहि, बल्कि आत्मनिर्भर ग्राम्य जीवनक दर्शनक उद्घोष थिक।

खेती आ लेखनक संग मण्डलजीक सामाजिक दृष्टिकोण सेहो जुड़ल रहल। ओ गामक लोककेँ नव तकनीक, उन्नत बीज, जल-संरक्षण आ फसल-चयनक दिशामे लगातार प्रेरित करैत रहलाह। भूमिहीन आ गरीब परिवारक बीच खेतीक महत्त्व बुझेबाक चेष्टा, किसानक सम्मानक प्रतिष्ठा आ वंचित वर्गक सहभागिता सुनिश्चित करबाक प्रयास- ई सभ हुनक आजीविकाक सामाजिक चेतनाक उदाहरण अछि।

मण्डलजीक जीवनमे खेती आ साहित्य बीच गहन संतुलन देखाइत अछि। अपन पोथीसभक लेखन, सम्पादन, प्रकाशन आ प्रसारक सम्पूर्ण जिम्मेदारी ओ अपन खेतीक आमदनीसँ पूरा करैत रहलाह। सरकारी अनुदान वा संस्थागत सहयोगक अपेक्षा नहि करैत ओ पूर्ण आत्मनिर्भर रहलाह। 'पल्लवी प्रकाशन'क माध्यमसँ पोथी छपाइ, वितरण आ निःशुल्क प्रसार धरि- ई सभ कार्य हुनकर स्वावलंबन आ नैतिक मूल्यक परिचायक सिद्ध भेल अछि।

ई आत्मनिर्भरता मण्डलजीक साहित्यिक साधनाक आधार बनल। हुनक जीवन गांधीजीक 'स्वराजी अर्थदृष्टि'सँ प्रेरित बुझाइत अछि। खेती हुनका लेल केवल भरण-पोषणक साधन नहि रहल। ई हुनकर चिन्तन, अनुभव, स्वाभिमान आ सामाजिक चेतनाक आधार सेहो बनल। ऊच्च शिक्षा प्राप्त कएलाक पश्चातहु मण्डलजी सिरिफ औपचारिक ज्ञानमे सीमित नहि रहलाह, बल्कि ओकर सार-तत्त्वकेँ जीवन आ आजीविकामे उतारलनि। एहि अर्थमे मण्डलजीक जीवनक उदाहरण स्पष्ट करैत अछि जे पढ़ल व्यक्ति ओहि ठाम उपयोगी अछि, जतए पढ़ाइ जीवनक उपयोगिता बनय।

आचार-व्यवहार-

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आचार-व्यवहार हुनकर व्यक्तित्व आ जीवन-दृष्टिक मूल आधारक रूपमे उभरिकऽ आबैत अछि। साहित्यकारक रूपमे ओ मात्र रचनाकार नहि, अपितु संस्कृतिक वाहक, मानवीय मूल्यक संरक्षक आ जीवन-दर्शनक व्यावहारिक प्रतिरूप छथि। हुनक सम्पूर्ण जीवन-पद्धति एहन संतुलित रूपेँ विकसित भेल अछि जे परंपरा आ आधुनिकता, अनुशासन आ सहजता, तथा आत्मसंयम आ आत्मीयता बीचक अद्भुत सामंजस्यक परिचायक अछि।

मण्डलजीक आचार-व्यवहारमे सर्वप्रथम जे विशेषता दृष्टिगोचर होइत अछि, से अछि संयम आ मर्यादाबोध। ओ सदैव अपन व्यवहारमे विनम्रता आ अनुशासनक पालन करैत छथि। सामाजिक जीवनमे जेठ-पैघ वा कनिष्ठ-शिष्य, विद्वान वा सामान्य किसान, स्त्री वा पुरुष- सभक प्रती समान दृष्टि राखब हुनक स्वभावक मूल प्रवृत्ति अछि। हुनक व्यवहारमे कोनो प्रकारक भेदभाव वा असमानताक छाया नहि देखाइत अछि। ई व्यवहारिक लोकतंत्र मूलतः ओहि मानवीय मूल्यपर आधारित अछि जे मनुष्यकेँ केवल मनुष्यक रूपमे स्वीकार करैत अछि। एहि मानवीय दृष्टिकोणक झलक हुनक समस्त साहित्यिक

रचनासभमे स्पष्ट झलकि उठैत अछि। कथा, उपन्यास वा नाटक- सभमे पात्रक प्रति हुनक आदर आ आत्मीयता जीवन्त रूपेँ व्यक्त होइत अछि। 'चाचा', 'भैया', 'काका', 'बाबा', 'दादी', 'नानी', 'बहिन' आदि संबोधन शब्द मात्र पारिवारिक संबंधक परिचायक नहि, बल्कि आदर, आत्मीयता आ व्यवहारिक संस्कारक गंभीर छापक प्रमाण सेहो बनि जाइत अछि। उदाहरण हेतु हिनक पहिल कृति (कथा विधामे) 'गामक जिनगी'सँ "एते किए सोगाएल छैथ काका! हिनका एते छैन तहन एते दुख होइ छैन, हमरा तँ किछु ने अछि तँए कि मरि जाएब।"[iv]

एहिना हिनक औपन्यासिक कृतिसभमे सेहो देखल जाइछ। जेना- पंगु (उपन्यास) "बाबा, अपन काज हुअए आकि अनकर काज, केतौ तँ मेहनतेक फल भेटत। तहूमे जखन अपना खेत-पथार अछि तखन जँ नोकरी करए जाएब तँ अपन खेती-पथारी केना हएत?"[v]

नाट्य कृति (स्वयंवर) मे "जीयालाल काका, अहूँ सोल्हन्नी भार नइ उठा सकै छी। कारण जे महिलाकेँ खुद तैयार हुअ पड़तैन। हम सभ सहयोगी हेबैन।"[vi]

दोसर महत्त्वपूर्ण पक्ष अछि अनुशासनबोध। ओ स्वयं अत्यन्त समयनिष्ठ आ नियमित जीवन जीबैत छथि। भोजन, अध्ययन-लेखन, कृषि-कर्म आ सामाजिक कार्य सभक लेल निश्चित समय आ रीति-नीति निर्धारित अछि। एहि अनुशासनमे कोनो प्रकारक कठोरता वा आडम्बर नहि, बल्कि सहज आदतिक रूपमे ओ जीवनक अंग बनि गेल छनि। मण्डलजीक अनुशासनबोध प्रदर्शनमूलक नहि, बल्कि मौन आ आंतरिक बलपर आधारित अछि, जे दोसराक लेल स्वतः प्रेरणास्रोत बनैत अछि।

तेसर पक्ष थिक समानता आ आत्मीयता। मण्डलजी जाहि स्थानपर पहुँचैत छथि, ओतए अपन व्यवहारक समानता आ सरलतासँ लोककेँ प्रभावित करैत छथि। मंचक विद्वानसँ बातचीत आ खेतक मजदूरसँ संवाद दुनूमे हुनक स्वर आ व्यवहार एक समान रहैत अछि। एहि कारणेँ ओ गामक लोकक दृष्टिमे असाधारण छवि बना लेला अछि। विद्वत्ता आ ओहदाक अहंकार हुनक व्यक्तित्वमे कतौ नहि भेटैत अछि। ओ स्पष्ट विचारक धनी छथि, मुदा ई स्पष्टता कटुता वा आक्रोशक रूपमे नहि, बल्कि विवेकपूर्ण आलोचनाक शैलीमे प्रकट होइत अछि।

चारिम पक्ष थिक आत्मनिर्भरता आ विनम्रता। मण्डलजी छोट-छीन काज अपनहि हाथे करैत छथि। आगन्तुक लेल आसन-पानिक व्यवस्था सेहो अपनहि करैत छथि। एहि व्यवहारसँ हुनक आत्मनिर्भर स्वभाव, विनम्र दृष्टिकोण आ लोकसंगत जीवनचर्या उजागर होइत अछि। एहि व्यवहारक कारण ओ गामक बच्चा-बूढ़सँ एक विशेष आत्मीय सम्बन्ध जोड़ि लैत छथि, जे हुनका सामान्य ग्रामीण परिवेशमे सेहो असाधारण बनबैत अछि।

मूलतः, मण्डलजीक आचार-व्यवहार सतही शिष्टाचार वा दिखावटी विनयपर आधारित नहि अछि। ई भीतरसँ उपजल ओ संवेदनशील जीवन-दृष्टि अछि, जे मनुष्यकेँ मात्र सामाजिक इकाइ नहि, बल्कि जीवित मूल्य मानैत अछि। एहि दृष्टिसँ ओ साहित्य आ समाजक बीच एहन सेतु बनबैत छथि, जे रचनात्मक कर्मसँ संग-संग व्यक्तिगत जीवनचर्यामे सेहो मानवीय मूल्य आ नब संस्कृतिक आदर्श स्थापित करैत अछि।

मैथिली आन्दोलनमे जगदीश प्रसाद मण्डलजीक सहभागिता-

श्री मण्डलजी मिथिलाक साम्यवादी नेता भोगेन्द्र झाक निकट अनुयायी छलाह। भोगेन्द्र झा मैथिली भाषासँ गहींर स्नेह रखैत छलाह आ सदिखन एहि भाषाक अधिकारक रक्षा लेल समर्पित रहैत छलाह। साम्यवादी दल अपन राजनीतिक गतिविधिमे मैथिलीकेँ अपनाबैत छल। संभाषण, प्रवचन, पोस्टर आ बैनर सभमे ई भाषा प्रमुख रहल। संगहि, मैथिली विकास आ अधिकारक सवालपर दल निरन्तर आन्दोलन चलबैत रहल। एहि अभियानमे जगदीश प्रसाद मण्डलजी सक्रियतापूर्वक भोगेन्द्र झाक संग सहगामी रहलाह। मैथिलीकेँ सरकारी मान्यता दिलेबाक प्रयासमे भाग लैत हिनका अनेक बेर जेल सेहो जाए पड़ल। एहि प्रसंग डॉ. योगानन्द झा अप्पन दीपवर्तिक पोथीमे उल्लेख कएलनि अछि- "श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलजी भोगेन्द्र झाक संग पुरैत रहलाह आ एहि कारणे सेहो हिनका दर्जनो बेर जहल-यात्रा करऽ पड़लनि। मैथिलीक हेतु हिनक ई त्याग मैथिली आन्दोलनक इतिहासक विशिष्ट घटनाक रूपमे स्मर्त्तव्य अछि।"[vii] अतः मैथिली भाषाक संरक्षण आ प्रसार लेल हिनक ई योगदान आन्दोलनक इतिहासमे खास स्मरणीय अछि। "मैथिलीक हेतु हिनक ई त्याग मैथिली आन्दोलनक इतिहासक विशिष्ट घटनाक रूपमे स्मर्त्तव्य अछि।"[viii]

प्रेम, सद्भावना आ अनुभूति-निष्ठा: मण्डलजीक जीवन-दृष्टि आ रचनात्मक स्वर-

1. सद्भावना: लेखकीय कर्तव्यक रूपमे- जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचनात्मक संसारक प्रमुख आधार मानवीय सद्भावना अछि। हुनक साहित्यमे जाति, धर्म, वर्ग वा लिंगक आधारपर कोनो प्रकारक घृणा, उपेक्षा अथवा प्रतिहिंसात्मक भाव नहि भेटैत अछि। यदि ओ आलोचना करैत छथि, तँ ओ कोनो व्यक्ति विशेषक नहि, बल्कि समाजक दुराचार आ विपरीत प्रवृत्तिक करैत छथि। एहि कारणेँ, दलित वा अगड़ा, स्त्री वा पुरुष, गरीब किसान वा शिक्षक, सभ पात्र अपन-अपन जीवन-संघर्षसँ गुजरैत अछि, मुदा कोनो वर्ग वा पक्षकेँ ओ अछूत वा नीच नहि ठहराबैत छथि। ई तथ्य स्पष्ट करैत अछि जे लेखकक दृष्टिकोण समतामूलक आ मानवीय नैतिकतापर आधारित अछि।

ओहि सद्भावनाक राजनीतिक रंग नहि, अपितु नैतिक चेतनामे रंगल छवि भेटैत अछि। ओ जातीय दंभ, धार्मिक असहिष्णुता आ वैमनस्यक विरुद्ध निरंतर विवेकक पक्षधर रहैत छथि। हुनक साहित्यक मानवीय धरातल एहि मूल्यकेँ प्रतिष्ठित करैत अछि।

2. आलोचनात्मक दृष्टिकोण: प्रेमक संयम आ संकोचशीलता- मण्डलजीक रचनासभमे प्रेमक प्रस्तुति उल्लेखनीय अछि। तथापि ई प्रेम पारंपरिक आवेग वा रोमानी उत्कटतासँ रहित अछि। ओ प्रेमकेँ आत्मानुशासनक धरातलपर स्थापित करैत छथि। एहि कारणेँ कतिपय स्थलपर प्रेमक अनुभूति सजीव होइत अछि, मुदा भावनात्मक रंगक तीव्रता कम देखाइत अछि। विशेषतः आधुनिक दृष्टिवाला वा युवा पाठक लेल ई प्रेम संकोचशील अथवा प्रतीकात्मक बुझाइत अछि। तथापि मण्डलजीक प्रेमक मूल स्वर सहनशीलता, विवेक आ आत्मीय स्नेह अछि। ओ अपन पात्र आ पाठक सभसँ गामक पितृवत् सरोकार रखैत छथि। एहि अर्थमे हुनक प्रेम गहींर मानवीय आ आत्मीय बंधनक प्रतीक अछि।

3. प्रेमक सांस्कृतिक भूमिका: नव मूल्यक निर्माण- मण्डलजीक प्रेम आ सद्भावना व्यवहार वा रचनात्मक अभिव्यक्तिमे सीमित नहि रहि जाइत अछि। ई दुनू तत्त्व सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य निर्माणक आधार बनैत अछि। हुनक जीवन आ साहित्य वैमनस्यपूर्ण संस्कृतिक मौन प्रतिरोधक रूपमे देखल जा सकैत अछि। जे समाजक संरचना मनुष्यकेँ वर्ग, जाति, धर्म वा विचारक आधारपर विभाजित करैत अछि, ओकरा विरुद्ध मण्डलजीक दृष्टि मानवीय एकात्मताक मूल्य स्थापित करैत अछि। एहि दृष्टिसँ मण्डलजीक प्रेम आ सद्भावना नब संस्कृतिक प्रतिमान गढ़ैत अछि।

4. अनुभूति-निष्ठा: यथार्थक आत्मानुभव- मण्डलजीक लेखनक मूलाधार अनुभूति-निष्ठा अछि। ओ समाजक अनुभवसभकेँ बाहरसँ नहि, भीतरसँ जीबैत छथि। हुनक कथा वा उपन्यासमे दलित पीड़ाक वर्णन करुणा-प्रधान नहि, बल्कि सहभागी दृष्टिसँ होइत अछि। पंगु उपन्यास वा विश्व शान्ति कथा संग्रहमे एहि दृष्टिकोणक स्पष्ट प्रमाण भेटैत अछि। ओ कथनक भावनात्मक नाटकीयतासँ बचैत छथि आ ओकरा संयमित, हृदयस्पर्शी आ यथार्थपरक बनबैत छथि। एहि कारणेँ हुनक लेखन केवल आनन्द नहि, अपितु पाठकक अंतःकरणकेँ झकझोरि दैत अछि।

5. निर्वैयक्तिकता: अहं-शून्यता आ रचनात्मक निष्ठा- मण्डलजीक साहित्यक एक गहींर विशेषता निर्वैयक्तिकता अछि। ओ अपन रचनामे कतौ 'हम'क हस्तक्षेप नहि करैत छथि। हुनक पात्र उपेक्षित आ मौन समाजक प्रतिनिधि अछि। ओ उपदेशक वा उद्धारक मात्र भूमिका नहि निमाहैत छथि, बल्कि समाजक अनुभवक प्रत्यक्ष गवाह सेहो बनैत छथि। एहि कारणेँ हुनक लेखनी अधिक प्रामाणिक प्रतीत होइत अछि। ओ अपन आत्मकथा वा व्यक्तिगत संघर्षकेँ साहित्यपर थोपै नहि छथि, बल्कि समाजक कथा सुनबकेँ प्राथमिकता दैत छथि। ई निर्वैयक्तिकता दरअसल साहित्यिक विनय आ रचनात्मक निष्ठाक परिचायक अछि।

6. आलोचनात्मक दृष्टि: आत्मशक्तिपर आधारित विवेक- कखनो-काल निर्वैयक्तिकतापर आलोचना होइत अछि जे लेखक स्वयंकेँ रचनासँ बहुत दूर राखि दैत छथि। मुदा मण्डलजीक निर्वैयक्तिकता आत्मदैन्यक प्रतीक नहि, अपितु नैतिक निर्णयक उपज अछि। ओ अपन अहंकेँ कखनहुँ केन्द्र नहि बनबैत छथि, बल्कि समाजक समस्यासभ आ लोकक स्वरकेँ रचनाक केन्द्र बनबैत रहलाह अछि। ई दृष्टि लेखककेँ प्रामाणिकता आ विश्वसनीयता प्रदान करैत अछि।

निष्कर्ष: मूलतः, जगदीश प्रसाद मण्डलजीक साहित्य आ व्यक्तित्वक मूल स्वर प्रेम, सद्भावना, अनुभूति-निष्ठा आ निर्वैयक्तिकता अछि। प्रेम ओतबा प्रतीकात्मक आ संयमित अछि, मुदा सद्भावना सजीव आ लोकगंधी। ओ सतही रोमानी भाव नहि, अपितु मानवीय एकात्मताक सांस्कृतिक मूल्य निर्माण करैत छथि। अनुभूति-निष्ठा आ निर्वैयक्तिकता हुनका समाजक अनुभवक सच्चा गवाही बना दैत अछि। एहि दृष्टिसँ मण्डलजी समकालीन मैथिली साहित्यकारसभमे अद्वितीय स्थान रखैत छथि।

रचनात्मक यात्रा-

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक साहित्यिक यात्रा 2000 ई.सँ विधिवत आरम्भ मानल जाइत अछि। “श्रीमण्डलजी आशुलेखक छथि। यद्यपि ई रचना कर्ममे दू हजार इस्वीक पछाति प्रवेश कयलनि मुदा तहियासँ अनवरत लेखनमे प्रवृत्त छथि।”[ix] यद्यपि लेखकक अनुभव आ संवेदना गामक जीवन, किसानक संघर्ष आ सामाजिक यथार्थसँ उपजल, मुदा प्रकाशनक दृष्टिसँ 2009 ई.सँ निरंतर धारा बनल। 2009सँ 2025 धरि हुनक लेखनी कथा, उपन्यास, नाटक, कविता, गीत, आलोचना आ बालसाहित्य- सभ विधामे सक्रिय रहल।

आरम्भिक चरण (2009-2010)

2009मे एकहि साल पाँच कृति प्रकाशित भेलनि- गामक जिनगी (कथा संग्रह), मौलाएल गाछक फूल (उपन्यास), उत्थान-पतन (उपन्यास), जिनगीक जीत (उपन्यास), मिथिलाक बेटी (नाटक)

2010मे सेहो तीन उल्लेखनीय कृति प्रकाशित भेलनि- तरेगन (प्रेरक कथा), जीवन-मरण (उपन्यास), जीवन-संघर्ष (उपन्यास)

एहि कालमे मण्डलजीक साहित्यक मूल स्वर- ग्राम्य जीवन, संघर्ष आ सांस्कृतिक चेतना- स्पष्ट भेल।

विस्तार आ सघनता (2013-2015)

2013सँ 2015 धरि प्रकाशनक तीव्रता बढ़लनि। कथा संग्रह: बजन्ता-बुझन्ता, शंभुदास, उलबा चाउर, अर्द्धांगिनी, सतभैंया पोखैर, भकमोड़, गढ़ैनगर हाथ, गामक शकल-सूरत, लजबिजी, अप्पन-बीरान, बाल गोपाल, पतझाड़ आदि।

उपन्यास: नै धाड़ैए, बड़की बहिन, ठूठ गाछ। कविता/गीत: इन्द्रधनुषी अकास, राति-दिन, सरिता, गीतांजलि, सुखाएल पोखरिक जाइठ, तीन जेठ एगारहम माघ। नाटक/एकांकी: कम्प्रोमाइज, झमेलिया बिआह, रत्नाकर डकैत, स्वयंवर, पंचवटी, कल्याणी, सतमाए, समझौता, तामक तमघैल, बीरांगना। ई समय लेखनीक परिपक्वता आ बहुआयामी प्रयोगक काल मानल जा सकैत अछि।

प्रौढ़ अवस्था (2016-2018) एहि चरणमे रचनात्मकता आ गहिराइ औरो बेसी विकसित भेलनि। कथा संग्रह: एगच्छा आमक गाछ, डभियाएल गाम, गुलेती दास, मुड़ियाएल घर, स्मृति शेष, बेटीक पैरुख, क्रान्तियोग, त्रिकालदर्शी। उपन्यास: इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं (2017), लहसन, पंगु, आमक गाछी (2018)।

कविता/गीत: सतबेध (2018)। ई काल उपन्यास-लेखनक गहींर आयाम खोललक। व्यापकता आ बहुआयामी लेखन (2019-2021)

2019सँ 2021मे प्रकाशनक बाढ़ि आएल।

कथा संग्रह: खिलतोड़ भूमि, चितवनक शिकार, चौरस खेतक चौरस उपज, समयसँ पहिने चेत किसान, भौक, गामक आशा टुटि गेल, पसेनाक मोल।

कविता/गीत: चुनौती, रहसा चौरी (2019), कामधेनु, मन मथन, अकास गंगा (2020)।

उपन्यास: सुचिता (2020), मोड़पर, संकल्प, अन्तिम क्षण, कुण्ठा (2021)।

आलोचना/निबन्ध: पयस्विनी (2021)।

एहि समय मण्डलजी उपन्यास, कथा, आलोचना आ गीत सभ क्षेत्रमे समान रूपसँ सक्रिय रहलाह।

उपन्यास: सुनयना बेटी (2023)।

बाल साहित्य: नियति आ पुरुषार्थ, श्रद्धा (2023), मुक्ति आदि (2024)।

नवीन प्रयोग आ विविधता (2022-2025)

2022-25मे लेखनी नवीन दिशा लऽ कऽ आगू बढ़ल। कथा संग्रह: संचरण, भरि मन काज, आएल आशा चलि गेल, जीवन दान, अप्पन साती, साहित्यकारक विवेक, नब बनक नब फल (2022); सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल, बासभूमि, टकुआटान, एकलव्यपन, एक चुटकी खुशी (2023); मुक्ति, प्रकृतिस्थ, समाजक ऐना, अप्पन सेवा अपने हाथ, अठहत्तरिम स्वतंत्रता दिवस, सहोदर भाय, मौन, विश्व शान्ति (2024); स्वतंत्र व्यक्तित्व, विचारक मोड़, झारखण्ड दर्शन, समाजक गति, प्रतिस्पर्द्धा, सत्यमेव जयते (2025)।

समग्र मूल्यांकन: 2009सँ 2025 धरि जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचनात्मक यात्रा मैथिली साहित्यक इतिहासमे

विरल उदाहरण थिक।

कथा संग्रह: 85+ (अस्सीसँ बेसी)

उपन्यास: 18+

नाटक/एकांकी: 10+

कविता/गीत: 11+ (दर्जन भरि)

बाल साहित्य आ आलोचना-निबन्ध: पर्याप्त संख्या

ओ समाजक यथार्थ, ग्रामीण जीवनक संघर्ष, सांस्कृतिक चेतना आ मानवीय मूल्यसभक निरंतर प्रवक्ता रहलाह। हुनक लेखनी न केवल साहित्यिक साधना, बल्कि मिथिला समाजक दस्तावेज़ अछि।

पुरस्कार ओ सम्मान

श्री मण्डलजीक रचनात्मक यात्रा सदिखन पुरस्कार आ सम्मान सँ आलोकित रहल अछि। "2011 मे हिनका चौबीस गोट राष्ट्रीय मान्यताप्राप्त भाषाक बीच केन्द्रीय स्तरक टैगोर लिटरेचर एवार्ड प्राप्त भेलनि।"[x] एहि उपरान्त 2021 मे अखिल भारतीय स्तरक साहित्य अकादेमी पुरस्कार सँ हिनका सम्मानित कएल गेल। एहि दू पैघ उपलब्धिक अतिरिक्त विभिन्न संस्था सभक द्वारा हिनका अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार आ सम्मान भेटल, जे हिनक साहित्यिक व्यक्तित्वक लोकप्रियता आ गरिमाक परिचायक अछि।

उल्लेखनीय पुरस्कार आ सम्मान निम्न अछि-

विदेह सम्मान- 2011

वैदेह सम्मान- 2012

कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015

वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान- 2016

कौमुदी सम्मान- 2017

यात्री चेतना पुरस्कार- 2017

स्व. बाबू साहेव चौधरी सम्मान- 2018

राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020

अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार- 2022

यात्री सम्मान- 2022

मिथिला शिखर सम्मान- 2022

महाकवि पण्डित लालदास साहित्य गौरव सम्मान- 2023

उपसंहार-

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जीवन आ रचनात्मक यात्रा मैथिली साहित्यक आधुनिक इतिहासमे एक महत्त्वपूर्ण अध्याय रूपेँ जुटैत होइत अछि। ग्रामीण जीवनक माटि, कृषक श्रम, सामाजिक संघर्ष आ सांस्कृतिक चेतनापर आधारित हुनक लेखन मात्र साहित्यिक कृति नहि, अपितु समयक प्रामाणिक दस्तावेज बनि गेल अछि। 2009 ईसवीसँ आरम्भ भेल निरन्तर प्रकाशनयात्रा पच्चीस वर्षक अन्तरालमे जतेक विस्तार आ विविधता प्राप्त कएलक, ओ समकालीन मैथिली गद्यसाहित्यमे एक अद्वितीय उदाहरण मानल जाए सकैत अछि। कथा, उपन्यास, नाटक, गीत, कविता, आलोचना आ बाल-साहित्यसभ क्षेत्रमे हुनक योगदान रचनात्मक सघनता, वैचारिक परिपक्वता आ सामाजिक सरोकारक प्रति अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित करैत अछि।

मण्डलजीक व्यक्तित्व आ हुनक साहित्य बीच कोनो विभाजन नहि देखाए पड़ैत अछि। कृषि श्रम आ साहित्यिक साधना, सामाजिक व्यवहार आ वैचारिक दृष्टिकोण सभक समन्वय हुनका समाजनिष्ठ साहित्यकारक रूपमे प्रतिष्ठित करैत अछि। प्रेम, सद्भावना, अनुभूतिनिष्ठा आ निर्वैयक्तिकता जकाँ मानवीय मूल्य हुनक सम्पूर्ण साहित्यक आधारभूत तत्त्व रूपमे उभरल अछि।

भारतीय साहित्यक व्यापक परिप्रेक्ष्यमे मण्डलजीक कृति प्रेमचन्द, फणीश्वरनाथ 'रेणु', सुब्रमण्यम भारती आ नागार्जुन

जकाँ ओहि रचनाकारसभक परंपरामे अवस्थित करैत अछि, जे समाजक पीड़ा आ जनजीवनक संघर्षकेँ साहित्यक मूल संवेदना बनौलनि। मिथिला आ उत्तर बिहारक ग्राम्य जीवनक जे प्रामाणिक चित्रण मण्डलजी प्रस्तुत करैत छथि, ओ हिन्दी आ अन्य भारतीय भाषाभाषी पाठकसभ लेल सेहो सार्वभौम अनुभवक रूप धारण करैत अछि।

वैश्विक स्तरपर हुनक साहित्यक यथार्थवादी आ मानवीय दृष्टिकोण गाब्रिएल गार्सिया मार्केस, मैक्सिम गोर्की आ न्गूगी वा थियोंगो जकाँ विश्वस्तरीय रचनाकारसभक परंपरासँ संवाद स्थापित करैत अछि। ई सभ लेखक समाजक संघर्ष, जनजीवनक यथार्थ आ सांस्कृतिक अस्मिताकेँ साहित्यिक माध्यमसँ वैश्विक विमर्शमे प्रतिष्ठित करैत छथि। जगदीश प्रसाद मण्डलजीक लेखन सेहो एहि वैश्विक प्रवाहमे सम्मिलित भऽ मैथिली साहित्यकेँ विश्वसाहित्यक संवादक स्तर तक पहुँचेबाक क्षमता रखैत अछि।

अतः निष्कर्षस्वरूप कहि सकैत छी जे जगदीश प्रसाद मण्डलजी एहन साहित्यकार छथि, जे ग्राम्य जीवनक यथार्थकेँ साहित्यिक मूल्य, सामाजिक चेतना आ मानवीय एकात्मतासँ जोड़िकए मैथिली साहित्यक क्षितिजकेँ नब दिशा प्रदान करैत छथि। हुनक साहित्य केवल मनोरंजन वा कलात्मक प्रदर्शन नहि, अपितु आत्मनिर्भर ग्राम्य जीवन, सांस्कृतिक समरसता आ मानवीय संवेदनाकेँ प्रतिष्ठित करबाक साहित्यिक अभियान थिक। एहि अर्थमे मण्डलजीक साहित्य मिथिलाक वर्तमानक दर्पण, भविष्यक दिशानिर्देशक आ भारतीय तथा वैश्विक साहित्यिक परंपराक एक सशक्त योगदानक रूपमे स्थापित होइत अछि।

सन्दर्भ सकेत-

[i] ठाकुर गजेन्द्र. जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी (बायोग्राफी)। पहिल संस्कारण, 2013। तेसर संस्करण 2025। निर्मली: पल्लवी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या: 06

[ii] झा डॉ. योगानन्द. दीपवर्तिका (समालोचना)। पहिल संस्करण 2023, निर्मली: पल्लवी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या: 10

[iii] तत्रैव, पृष्ठ संख्या: 15

[iv] मण्डल, जगदीश प्रसाद. गामक जिनगी (कथा-संग्रह)। पहिल संस्करण: 2009; आठम संस्करण: 2024। निर्मली: पल्लवी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या: 12

[v] मण्डल, जगदीश प्रसाद. पंगु (उपन्यास)। पहिल संस्करण: 2018। निर्मली: पल्लवी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या: 64

[vi] मण्डल, जगदीश प्रसाद. स्वयंवर (नाटक)। पहिल संस्करण: 2013। निर्मली: पल्लवी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या: 48

[vii] झा डॉ. योगानन्द. दीपवर्तिका (समालोचना)। पहिल संस्करण 2023, निर्मली: पल्लवी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या: 16

[viii] तत्रैव, पृष्ठ संख्या: 16

[ix] तत्रैव, पृष्ठ संख्या: 17

[x] तत्रैव, पृष्ठ संख्या: 18